B.A. Sem. III (Sociology)
(Session 2020-21)

Paper I : Foundation of Sociological Thought-I

Topic : Herbert Spencer (Organicism)
हरबर्ट स्पेन्सर (सावयववाद)

Unit-II

Lecture 9

Prepared By : Dr. Vijay Kumar

सावयववाद (Organicism) :-

समकालीन प्रकार्यवादियों की तरह हरबर्ट स्पेंसर ने ब्रहमाण्ड को तीन क्षेत्रों में विभक्त किया :—

(a) Inorganic (physical, chemical) अजैविक (जो सजीवों से निर्मित या प्राप्त नहीं)

(b) Organic (biological, psychological) जैविक

(c) Superorganic (Sociological)

स्पेंसर ने देखा कि Organic और Superorganic क्षेत्र दोनों ही समान अमूर्त नियमों का पालन कर रहे हैं।
(Spencer saw both the organic and superorganic realms as obeying the same abstract laws.[1]

स्पेंसर Organic (शरीर) और Superorganic (समाज) bodies में समानताएं पाते हैं (parallels in principles of organization)।

In his view, societies, similar to living organisms, "begin as germs".

"समाज एक सावयव (शरीर रचना) जैसे है"
("society as an Organism."[2]

Society as a whole, like the living body, is characterized by, among other things, growth, structure, and function.[3]

समाज और शरीर के बीच तुलना :-
(The analogy between a society and an Organism)

स्पेंसर ने 'संरचना', 'प्रकार्य' और 'प्रकार्यात्मक अन्तःनिर्भरता' के आधार पर दोनों में तुलना किया। स्पेंसर ने 'समाज' और 'शरीर' के बीच में तुलना 'समानताओं' और 'विभिन्नताओं' के आधार पर की है :-

समानताएं (Similarities) :-

1. शरीर और समाज दोनों ही निर्जीव पदार्थ से भिन्न हैं। दोनों ही आकार में बढ़ते हैं। संरचना में भी वृद्धि होती है। इससे इनकी जटिलता और विभेदीकरण में वृद्धि होती है।
2. दोनों की संरचना में जैसे-जैसे ~~अधिक~~ जटिलता और विभेदीकरण में वृद्धि होती है, वैसे-वैसे उनके कार्यों में भी विभेदीकरण उत्पन्न होता जाता है।
3. शरीर या समाज का कोई भी भाग, अपने आप में, एक छोटा सा संगठन होता है।
4. शरीर और समाज का यदि पूरा संगठन नष्ट कर दिया जाय तो भी उसके बिखरे हुए अंग कुछ देर तक जीवित रहते हैं, यद्यपि सामुच्य का जीवन नष्ट हो जाता है।[4]

विभिन्नताएं (Differences) :-

1. सावयवी विकास (शरीर) में प्रकृति का सर्वप्रथम योगदान होता है; प्राकृतिक नियम के अनुसार, एक निश्चित गति

से सावयव अपने आप बढ़ता या विकसित होता रहता है। इसके विपरीत समाज का विकास प्राकृतिक नियम के अनुसार अपने आप न होकर मनुष्यों के सचेत प्रयत्नों के फलस्वरूप होता है और मनुष्य द्वारा उस विकास की गति तेज या धीमी की जा सकती है।

2. एक सावयव का निर्माण अनेक कोष्ठों (cells) से होता है, परन्तु ये सम्पूर्ण सावयव में इस प्रकार घुल-मिल जाते हैं कि उनका स्वतन्त्र अस्तित्व सम्भव ही नहीं होता। परन्तु यह बात समाज पर लागू नहीं होती है।

3. सावयव में चेतन शक्ति स्नायुमण्डल में केन्द्रित होती है। प्रत्येक अंग की पृथक शक्ति नहीं होती है। इसके विपरीत समाज में प्रत्येक अंग की पृथक चेतन शक्ति होती है। जैसे - परिवार, शिक्षण संस्थाएं, औद्योगिक इकाईयाँ, राजनीतिक दल, इसी प्रकार के अन्य समूह की अपनी अलग चेतना होती है।

इस प्रकार, स्पेन्सर जीवित शरीर की जब तुलना समाज से करते हैं तो उनका उद्देश्य ऐसी एक व्यवस्था की ओर संकेत करना है जिसमें समाजवादी व्यवस्था की भाँति चेतन शक्ति केन्द्रित होती हो। इसके साथ ही समाज के प्रत्येक सदस्य के अन्दर पृथक चेतन शक्ति के अस्तित्व को स्वीकार कर Spencer वैयक्तिक स्वतन्त्रता का समर्थन करते हैं। 5

संदर्भ - ग्रन्थ

1. Turner, Jonathan H., The Structure of Sociological Theory, Jaipur: Rawat Publications, 1995, P. 42
2. Ritzer, George, Classical Sociological Theory, New York: Mc Graw Hill, 2000, P. 126
3. Ibid, P. 121
4. श्रीवास्तव, डॉ० हरिश्चन्द्र, आधुनिक समाजवैज्ञानिक सिद्धान्त परिचय, लखनऊ: उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, 1991, पेज. 16
5. मुकर्जी, रवीन्द्र नाथ, सामाजिक विचारधारा, दिल्ली: सरस्वती सदन, जवाहर नगर, 1973, पेज. 99.